The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 6 | June 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF(2026): 5.6
Website: www.theacademic.in

भारत बांग्लादेश के संबंधों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

कीर्ति चौहान

शोधार्थिनी, आगरा कॉलेज आगरा, डॉ. भीमराव अंबेडकर यूनिवर्सिटी, आगरा

प्रोफेसर डॉक्टर मृणाल शर्मा

विभागध्यक्ष राजनीति विज्ञान, आगरा कॉलेज आगरा, डॉ. भीमराव अंबेडकर यूनिवर्सिटी, आगरा

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.21477768

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Received: 19-05-2026

Accepted: 28-06-2026

Published: 15-07-2026

Keywords:

बांग्लादेश ,भारत, समस्याएं, विवाद ,सीमा ।

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध पत्र ''भारत बांग्लादेश के संबंधों का विश्लेषणात्मक अध्ययन'' के साथ इसका संबंध दर्शाते हुए वर्तमान में इसके सुदृढ़ीकरण के उन्मुक्त पर बल देता है।शोध पत्र मुख्य रूप से भू राजनीतिक के आवेग और क्षेत्र की पुरानी ऐतिहासिक विरासत के कारण दोनों देशों के मध्य संबंधों की संभावित रूपरेखा दिशा को दर्शाते हुए,दोनों देशों के आपसी संबंधों का वर्तमान परिपेक्ष में अध्ययन करना है। भारत और बांग्लादेश दक्षिण एशिया में एक दूसरे के पड़ोसी देश हैं। इन दोनों देशों के मध्य संबंध काफी प्राचीन है। इस शोध पत्र में बताया गया है, कि दोनों देश अच्छे पड़ोसी होने के नाते दक्षिण एशिया में अपनी छवि व अपने मूल उद्देश्यों की पूर्ति कैसे करेंगे और उनके संबंधों पर क्या–क्या प्रभाव देखने को मिलेगा । सन 2014 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पड़ोस पहल की नीति के आगमन के उपरांत बांग्लादेश पड़ोसी देश और सबसे विस्तृत सीमा साझा करने वाले देश होने के नाते भारत के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यदि भारत और बांग्लादेश के संबंध मधुर रहेंगे तो दक्षिण एशिया में यह दोनों देश अपने देश राष्ट्रीय हितो को पूर्ण कर सकेंगे। जिससे दोनों देशों के आर्थिक विकास में वृद्धि हो सकेगी ।

प्रस्तावना

बांग्लादेश जो अब एक प्रभुता संपन्न राज्य है। भारत के स्वतंत्रता से पूर्व भारत का ही एक अंग था। जब 1947 में भारत का विभाजन हुआ उसके बाद यह पूर्वी पाकिस्तान के रूप में जाना जाता था। मार्च 1971 में तत्कालीन पूर्वी

Disclaimer: The opinions, interpretations, conclusions, recommendations, analyses, and statements expressed in this research article are solely those of the author(s) and do not reflect the views, policies, or positions of the Publisher, Chief Editor, Editors, Editorial Board, Reviewers, or their affiliated institutions. The author(s) are solely responsible for ensuring the originality, authenticity, and integrity of the manuscript and for ensuring that it is free from plagiarism, AI-generated content, copyright infringement, data falsification, and any other form of academic misconduct.

पाकिस्तान में भारत–पाकिस्तान युद्ध आरंभ हुआ। प्रांत के सबसे लोकप्रिय नेता मुर्जीबुर रहमान को बंदी बनाकर पश्चिमी पाकिस्तान की एक जेल में डाल दिया गया था। पूर्वी पाकिस्तान की जनता की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष में भारत की पूरी सहानुभूति उनके साथ थी। परंतु भारत ने उसे उस समय मान्यता प्रदान नहीं की। क्योंकि यह माना जाता था ,कि इस मान्यता को बहाना बनाकर पाकिस्तान भारत के विरुद्ध युद्ध आरंभ न कर दे परंतु जब 3 दिसंबर 1971 को बांग्लादेश के प्रश्न पर भारत पाक युद्ध आरंभ हो ही गया, तब भारत ने 6 दिसंबर 1971 को बांग्लादेश को एक स्वतंत्र देश के रूप में मान्यता प्रदान कर दी । मार्च 1972 मे भारत बांग्लादेश कें मध्य **शांति संधि** पर हस्ताक्षर किए गए।

विश्लेषण

भारत को मार्च और दिसंबर 1971 के बीच की अवधि में विचित्र स्थिति का सामना करना पडा। युद्ध में लगभग 20000 भारतीय जवान वीरगति को प्राप्त हुए । बांग्लादेश के उद्भव को इस उपमहाद्वीप की एक महत्वपूर्ण घटना माना जाता है। यह बांग्लादेश की जनता के लिए आतंकवाद और यातनाओं का अंत माना जाता था । भारत के लिए यह लोकतांत्रिक समाजवाद और धर्मनिरपेक्षता की विजय मानी गई। पाकिस्तानी सेनापति लेफ्टिनेंट जनरल नियाजी ने भारतीय सेना की पूर्वी कमान के सेनापति लेफ्टिनेंट जनरल जगदीश सिंह अरोड़ा के सम्मुख बिना शर्त आत्म समर्पण करके पाकिस्तान की पराजय स्वीकार की थी । उस दौरान लगभग एक करोड़ यातना पीड़ित बांग्लादेशी शरणार्थी भारत आ गए। इन शरणार्थी ने वापस पाकिस्तान जाने से इनकार कर दिया । भारत की सरकार और प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा किए गए समस्त प्रयास असफल हो रहे थे। और इन प्रयासों का उद्देश्य पूर्वी पाकिस्तान की समस्या का शांतिपूर्ण समाधान करना था ।,परंतु स्थिति विपरीत हुई जब पाकिस्तान के सैनिक राष्ट्रपति यांहां खॉ ने युद्ध का मार्ग चुना। और सोचा कि उनकी विजय होगी। परंतु विजय भारत की हुई । भारत में बांग्लादेश की प्रादेशिक अखंडता की सुरक्षा का वचन दिया और कहा कि ,जैसे ही बांग्लादेश में स्थिति सामान्य होगी भारतीय सैनिक स्वदेश लौट आएंगे और नए बांग्लादेश राज्य के आर्थिक निर्माण के लिए भारत आर्थिक सहायता उपलब्ध कराएगी । 1971 से सन 2022 तक दोनों देशों के संबंधों का विश्लेषण करें तो हम यह देखेंगे कि दोनों देशों के संबंधों में काफी उतार–चढ़ाव आए हैं । जिसमें 1971 से 1975 तक शेख मुजीब रहमान और इंदिरा गांधी के मध्य संबंध काफी मधुर रहे। परंतु 1975 के बाद 1990 तक राष्ट्रपति इरशाद जो कि इस्लामी कट्टरपंथी के माध्यम से उन्होंने अपने देश बांग्लादेश को इस्लामी धर्म घोषित कर दिया एक तरफ लोकतांत्रिक धर्मनिरपेक्ष गणराज्य भारत था। तो दूसरे और कट्टर इस्लाम वाला राज्य तो वहां दोनों देशों के मध्य संबंधों में कट्टरता देखने को मिली। 1991 से 1996 में देखें तो प्रधानमंत्री एचडी देव गौड़ा के साथ बांग्लादेश के शेख हसीना के मध्य काफी अच्छे संबंध रहें। 29 मार्च 1972 को दोनों देशों के मध्य एक व्यापार समझौता संपन्न हुआ ,जिसमें प्रावधान था । कि भारत बांग्लादेश सीमा के दोनों और 16 किलोमीटर तक के क्षेत्र को कर मुक्त घोषित किया जाएगा । यह समझौता मैत्री संधि और व्यापार समझौते सामान्य मित्रता और पारस्परिक लाभ की भावना से संपन्न किया गया । दोनों देशों के मध्य व्यापारिक स्थिति इतनी मजबूत नहीं है ,जितनी होनी चाहिए दोनों

को अपने व्यापार में वृद्धि करने की आवश्यकता है । और यह तभी संपन्न है जब व्यापार घाटे को कम कर व्यापार में वृद्धि करने का आपसी सहयोग प्रदान करेंगे ।

विवाद भारत और बांग्लादेश दोनों देशों के मध्य काफी विवाद रहे हैं। फरक्का बंध जिसका निर्माण 1962 में किया गया था । इसके निर्माण का मुख्य उद्देश्य कोलकाता बंदरगाह की सुरक्षा भारत के राष्ट्रीय हित 1990 के दशक से पूर्व एकमात्र यह बंदरगाह था जिसे पानी के प्रभाव को मोड़ने से हुगली के लिए उचित मात्रा में पानी उपलब्ध कराया जा सके, परंतु यह अंतर्राष्ट्रीय विवाद का एक प्रमुख कारण हो गया ।और भारत–बांग्लादेशों के संबंधों में इस विवाद की वजह से मनमुटाव आया ।

न्यूमर दीप विवाद यह विवाद बंगाल की खाड़ी में एक छोटा सा टापू है। जिसका क्षेत्रफल 2 किलोमीटर से 12 वर्ग किलोमीटर है । तब बांग्लादेश ने आपत्ति जस्ताते हुए कहा कि यह भारत का नहीं बल्कि एक विवादस्पाद क्षेत्र है, और उस पर अपना दावा पेश किया और भारतीय झंडा फहराया जाने के विरोध में बांग्लादेश में भारतीय विरोधी प्रक्रिया देखे गए 1981 में जब भारतीय नौसेना का जहाज न्यूमर दीप के निकट पहुंचा था। तब बांग्लादेश ने इसका विरोध किया और इस विवाद क अब तक समाधान नहीं हुआ है यदि दोनों देश के शासन प्रमुख चाहे तो उसकी बातचीत के द्वारा समाधान निकाल सकते हैं ।

दोनों देशों के मध्य तीस्ता नदी जल विवाद विवादों में से प्रमुख है । तीस्ता नदी जो भारत से बांग्लादेश में प्रवेश करते हुए बंगाल की खाड़ी की ओर प्रवाहित होती है । भारत में पश्चिम बंगाल और बांग्लादेश के क्षेत्र के लिए यह सिंचाई का व जल पूर्ति का प्रमुख स्रोत है। इस विवाद को सुलझाने के लिए वर्तमान में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और शेख हसीना के मध्य सन 2014 में वार्ता हुई, परंतु अभी तक इस पर कोई समझौता नहीं किया गया है। ममता बनर्जी ने आपत्ति जताई जताई है ,कि यदि वह 25 प्रतिशत से अधिक पानी बांग्लादेश को दे नही सकता ,क्योंकि दिसंबर से मार्च में इतना पानी नहीं हो पता है। चीन ने इस नदी पर बांग्लादेश को बांध बनाने का प्रस्ताव दिया है, जो कि भारत के सुरक्षा का विषय है।

और सन 2009 से बांग्लादेश में शेख हसीना ने सत्ता संभाली है ,तब से भारत बांग्लादेश के संबंध काफी सौहार्दपूर्ण रहे हैं। दोनों देशों के संबंध प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी की पड़ोस पहले की नीति और बांग्लादेश सरकार की फास्ट्रेक को नीति के चलते आपसे सहयोग के जारी है। कई मुद्दों पर समाधान के दो तरफ कार्य नीति से महत्वपूर्ण संबंधों को बराबर बढ़ावा दिया गया । 31 जुलाई 2015 की तारीख को दोनों देशों के लिए ऐतिहासिक दिन बताया गया जिसमें वीजा व्यवस्था को सरल बनाने का समझौता शामिल किया गया और बांग्लादेश में विशेष आर्थिक क्षेत्र बनाने त्रिपुरा से बांग्लादेश को 100 मेगावाट अतिरिक्त विद्युत प्रदान करने और मैत्री एक्सप्रेस के फेरे बढ़ाने और गुवाहाटी और शिलांग के लिए बस सेवा शुरू करने जैसे प्रस्ताव को अंतिम रूप दिया गया । इस प्रकार दोनों देशों ने एक महत्वपूर्ण कदम के साथ सहमति व्यक्त की 8 अप्रैल 2017 को नरेंद्र मोदी और शेख हसीना ने परमाणु संबंधित तीन समझौते पर हस्ताक्षर किए जो दोनों देशों के लिए महत्वपूर्ण है । जो कि दक्षिण एशिया क्षेत्र में ज्ञान सहयोग और शांति का आधार प्रदान

करेंगे । दोनों देशों की यात्रा मील का पत्थर समझी गइ, क्योंकि इन तीन परमाणु सहित दोनों देशों ने विभिन्न क्षेत्रों में कुल 22 समझौता पर हस्ताक्षर किए जो कई विषयों से संबंधित थे। तथा दोनों देशों ने रक्षा सहयोग बढ़ाने की बात की और आतंकवाद को बर्दाश्त न करने पर सहमति व्यक्त की। सन 2021 में बांग्लादेश ने अपनी आजादी का पांचवा वर्ष जोर–जोर से मनाया मैत्री सेतु नामक पुल का उद्घाटन कर दोनों देश के प्रधानमंत्री के नेतृत्व में इसका उद्घाटन किया गया । जो दोनों देशों के मध्य मैत्री संबंधों का प्रतीक है।

27 मार्च 2021 को ढाका पहुंचे दोनों नेताओं के दिपक्षीय वार्ता के बाद पांच ज्ञापन समझौता पर भी हस्ताक्षर हुए। और पांच से 8 सितंबर 2022 को बांग्लादेश के प्रधानमंत्री शेख हसीना चार दिवसीय भारत यात्रा पर आए दोनों प्रधानमंत्री ने आपसी संबंधों के सभी बिंदुओं पर विचार विमर्श किया और 7 सितंबर 2022 को एक संयुक्त व्यक्तत्व भी जारी किया ।

18 सितंबर 2018 को प्रधानमंत्री मोदी ,शेख हसीना ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए 130 किलोमीटर लंबी पाइप लाइन जिसे भारत बांग्लादेश में ट्रिपल लाइन की संज्ञा दी गई जिसके द्वारा भारत पूर्व में जो पेट्रोलियम प्रोडक्ट रेल मार्ग से पहुंचता था। अब सीधा पाइपलाइन से बांग्लादेश पहुंचेगा । जिससे बांग्लादेश के ऊर्जा दक्षता में भी वृद्धि होगी। भारत बांग्लादेश के मध्य वर्ष 2015 में लैंड बॉर्डर एग्रीमेंट संपन्न हुआ है जिसके तहत दोनों देशों के मध्य सीमा विवाद तो सुलझा रहे हैं। साथ ही सीमा में आने वाली बस्तियों के लोगों को अपनी पहचान मिली और प्रवासी का खतरा भी कम हुआ ।भारत बांग्लादेश दोनों क्षेत्रीय संगठनों द्वारा आपसी संबंधों में सहयोग को बढ़ावा दे रहे हैं ।

भारत में बांग्लादेश द्वारा बिम्सटेक संगठन का सचिवालय स्थापित करने के लिए आभार व्यक्त किया और भारत ने इंडियन ओशन रिम एसोसिएशन के अध्यक्ष के रूप में बांग्लादेश का सहयोग करने का आश्वासन दिया।

शोध साहित्य समीक्षा भारत बांग्लादेश संदर्भ में अब तक अनेक शोध अनुसंधान एवं पुस्तकों का लेखन पूर्ण हुआ है, जैसे कि किसी भी शोधार्थी के लिए शोध पत्र का अध्ययन शोध कार्य में मार्गदर्शन एवं निर्देशन का कार्य करती है। अपने शोध में शोध साहित्य पुस्तक एवं पत्र–पत्रिकाओं का अध्ययन पूर्ण किया है ,उनकी शोध साहित्य समीक्षा निम्नलिखित है।

राजीव सीकरी अपनी पुस्तक भारत की विदेश नीति चुनौती और रणनीति के एक अध्याय में लिखते है कि बांग्लादेश भारत का एक विशेष पड़ोसी हैं । बांग्लादेश भारत के नक्शे में उसे जोड़ की तरह है, जो पूर्वोत्तर क्षेत्र को शेष भारत से जोड़ता है । जैसे मानव शरीर के जोड़ की तरह ही अहम भूमिका निभाता है और उसके आकृति बांग्लादेश को घिरा होने का एहसास कराती है ,तथा भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र के नजरिए से बांग्लादेश भारत का सबसे महत्वपूर्ण पड़ोसी है । आगे लिखते हैं कि बांग्लादेश कोई ना कोई बहाना बनाकर भारत को परगवन सुविधा देने से इनकार करता रहा है । दक्षिण एशिया में भारत और बांग्लादेश के बीच सीमा पर आना–जाना काफी बड़े पैमाने पर होता है ।वह दोनों देशों के मध्य पारस्परिक निर्भरता जो की बहुत अधिक है ,तथा आज भी बांग्लादेश बहुत सारी जरूरत के लिए भारत पर निर्भर है उनका विश्लेषण करते हैं । पिछले तीन से अधिक वर्षों से बांग्लादेश के राजनीतिक हिंसा और स्थिरता से ग्रस्त होने

से बांग्लादेश भारत संबंधों में ठहराव आ गया है। भारत के अधिकांश नीति निर्धारक बांग्लादेश से उत्पन्न भारत की सुरक्षा के खतरों के बारे में पूरी तरह से अवगत नहीं है उसके लिए आवश्यक है। कि भारत को जागरूकता बढ़ाने चाहिए जिससे वह विवादसपद स्थितियों से निपट सके । और बताया है कि वोट बैंक की राजनीति के कारण केंद्र राज्यों में सरकारों ने जानबूझकर भारत में बांग्लादेश से अवैध प्रवासियों अपेक्षा की है ।

पुष्पेश पंत भारत के विदेश नीति अपनी पुस्तक में भारत बांग्लादेश संबंधों की स्थिति ऐतिहासिक दृष्टिकोण के साथ से इंद्र कुमार गुजराल के नेतृत्व जो स्थितियां हुई या आपसी संबंधों पर जो प्रभाव रहा उनका विस्तृत वर्णन कर रहे हैं । पंत बताते हैं कि किस प्रकार से बांग्लादेश का उदय हुआ और उसके गठन का सारा श्रेय भारतीय सेवा नायक ने लिया और उसके साथ किस प्रकार से दोनों देशों के मध्य समस्याएं उजागर हुई । पुष्पेश पंत जी आगे लिखते हैं अपनी पुस्तक में मेजर जनरल समर सिंह की उस अशोभनीय आचरण का व्याख्यान करते हैं । सन 1971 से 75 के वर्षों में संबंध इंदिरा गांधी और जुल्फिकार अली भुट्टो के बीच शिमला समझौता और आपातकाल की घोषणा इंदिरा गांधी के शासनकाल में हुई । उस समय भारत अपने आंतरिक राजनीति की ओर ज्यादा मुखर रहा जिस प्रकार बांग्लादेश के साथ उसकी नजदीकियां कम हुए और शेख मुजीबुर रहमान का 1971 में किया गया ऐलान की बांग्लादेश एक धर्मनिरपेक्ष गणराज्य रहेगा। वह एक इस्लाम धर्म राज्य राष्ट्रपति इरशाद द्वारा घोषित कर दिया गया । जिसके कारण काफी सांप्रदायिक तत्वों को बढ़ावा दिया गया ,और भारत बांग्लादेश के संबंध असामान्य होने लगे गुजराल सिद्धांत जिसकी मान्यता थे । कि वह एक तरफ पहला और संतुष्टीकरण वाली नीति के माध्यम से दक्षिण एशिया में स्थाई शांति स्थापित कर सकती है, परंतु बांग्लादेश ने उसके नरम रुख को कमजोरी समझ और भारत पर निरर्थक दबाव बढ़ाया। भारत और बांग्लादेश संबंधों में बांग्लादेश कि कट्टरपंथी इस्लाम में सांप्रदायिकता के जहर का प्रवेश आने वाले दिनों में रह रहकर तनाव पैदा करती रहेगी ।

पुस्तक इंडिया फॉरेन पॉलिसी रेट्रोस्पेक्ट और प्रोस्पेक्ट सुमित गांगुली की पुस्तक में एक अध्याय में मिलिंद ठक्कर वर्णित करते हैं कि भारत और बांग्लादेश के संबंध ऐतिहासिक दृष्टिकोण से 2008 तक तीन भागों में वर्णित करते हैं, और दोनों देशों के मध्य क्या क्या कमजोरी है ।उसका विस्तृत रूप से वर्णन करते हैं उन्होंने दोनों देशों के मध्य सभी घटनाएं प्रक्रिया संबंधों को तीन भागों में विभाजित कर विश्लेषण प्रदान किया है। पहले 1971 से 1975 जिसमें वह बांग्लादेश का गठन की व्याख्या करते है । 1975 से 1990 बांग्लादेश के आंतरिक नीतियों व दोनों देशों के मध्य संबंधों में जो उतार–चढ़ाव आए उसका और तीसरे भाग में शीत युद्ध के बाद दोनों देशों के मध्य संबंध व वैश्विक स्तर पर दोनों देशों की भूमिका का विश्लेषण किया है।

जै एन दीक्षित अपनी पुस्तक इंडिया फॉरेन पॉलिसी एंड इट्स नेवर में लिखते हैं कि भारत और बांग्लादेश अपने संबंधों को कैसे बेहतर करेंगे उन्होंने अवामी लीग पार्टी शेख मुजीबुर रहमान के शासनकाल में और शेख हसीना के दौर में मधुर संबंध स्थापित हुए हैं। दोनों देश एक दूसरे के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। दोनों को पड़ोसी होने के नाते वह दक्षिण

एशिया में और भू राजनीतिक परिदृश्य में दोनों आपसी सहयोग से विकसित देश बन सकते हैं, यदि दोनों देश आपसी सहयोग कर सभी समस्याओं का समाधान करें।

वीरेंद्र नारायणी लेखक अपने एक अध्याय इंडिया'एस एटीट्यूड एंड पॉलिसीज टुवर्ड्स बांग्लादेश पर्सपेक्शंस ऑब्जेक्टिव एंड रिलेशंस के अध्याय में लिखते हैं, कि कैसे भारत ने बांग्लादेश के राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन में एक संप्रभु राष्ट्र के रूप में उभरने की प्रक्रिया में कैसे मदद की ,और शीत युद्ध के दौर में दक्षिण एशियाई क्षेत्र में स्थिरता और शांति के युग की शुरुआत की। और बताते हैं कि भारत ने अपने देश के विकास की अवधारणा को मजबूती प्रदान की। तथा गुटनिरपेक्षता के सिद्धांतों का पालन कर भाईचारे वह पड़ोसी संबंधों को बनाए रखने का संकल्प भी लिया ,इन सबका विस्तृत विश्लेषण अपने इस अध्याय में करते हैं।

उद्देश्य

दोनों देशों के आपसी संबंधों का वर्तमान परिपेक्ष में अध्ययन करना ।

दोनों देशों की साझी संस्कृति का अध्ययन करना ।

दोनों देशों के राष्ट्रीय हितों का अध्ययन करना ।

भारत की सुरक्षा चिंताओं का अध्ययन करना ।

दोनों देशों के दिपक्षीय संबंधों का अध्ययन करना।

भारत बांग्लादेश के सांस्कृतिक राजनीतिक में भौगोलिक संबंधों का परीक्षण करना ।

परिकल्पना

वैश्विक स्तर में महा शक्तियों के साथ सामंजस्य स्थापित करके भारत बांग्लादेश अपनी सुरक्षा तथा विकास को सुनिश्चित कर सकता है।

बांग्लादेश की चीन के साथ बढ़ती नजदीकियां भारत की असुरक्षा का विषय बन सकती है ।

भारत बांग्लादेश के मध्य काफी विवाद और आसुलझे बने हुए हैं जो क्षेत्रीय रणनीति में दोनों देशों की सक्रिय भूमिका में वृद्धि नहीं होने दे।

दोनों देशों के मध्य क्षेत्रों में आम सहमति नहीं बनी है जिससे उनके मध्य तनाव देखने को मिलता ।

शोध प्रविधि

इस पेपर का अध्यनरत हेतु विभिन्न शोध प्रविधि का उपयोग आवश्यकतानुसार उपयोग किया गया है । जिसमें ऐतिहासिक शोध प्रविधि वर्णनात्मक शोध प्रविधि विश्लेषणात्मक शोध प्रविधि । इस पेपर मे संकलन का भी उपयोग किया गया है ,जिसका आधार स्रोत द्वितीय संकलन से लिया गया है। जिसमें पुस्तक रिपोर्ट व अखबार शोध पेपर की सहायता से विवरण प्रस्तुत किया गया है। इस पेपर का अध्यनरत हेतु विभिन्न शोध प्रविधि का उपयोग आवश्यकता अनुसार किया गया है ,जिसमें ऐतिहासिक शोध प्रविधि विश्लेषणात्मक शोध प्रविधि व्याख्यात्मक शोध प्रविधि का उपयोग किया गया है।

संकलन में प्राथमिक व द्वितीय संकलन का प्रयोग किया गया है। जिसमें प्राथमिक संकलन में भारत सरकार विदेश मंत्रालय की रिपोर्ट ,शेख हसीना व प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग लोकसभा, राज्यसभा टीवी पर ,संवाद इत्यादि । द्वितीयक स्रोतों में अखबार , पुस्तक ,लेख, शोध पत्र का प्रयोग किया गया है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवरण से यह निष्कर्ष निकलता है,कि है भारत बांग्लादेश क्षेत्रीय सुरक्षा के लिए एक दूसरे के ऊपर निर्भर है। दोनों देश दक्षिण एशिया में स्थित है, भारत बांग्लादेश के संबंध काफी प्राचीन है ।बांग्लादेश भारत के साथ सबसे लंबी सीमा साझा करने वाला पड़ोसी देश है।वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व बांग्लादेश के प्रधानमंत्री शेख हसीना के मध्य दोनों देशों के संबंध में काफी प्रगाढता आई है । भारत और बांग्लादेश के संबंध सदैव उत्तर चढ़ाव के साथ देखे गए हैं ।यदि हम वर्तमान परिपेक्ष में देखें तो दोनों देश के संबंध ऊंचाइयों पर पहुंच गए हैं भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और बांग्लादेश के प्रधानमंत्री शेख हसीना के नेतृत्व में दोनों देशों के मध्य विभिन्न विवाद होने के बावजूद भी दोनों देश आपसी सहयोग के माध्यम से अपनी सकारात्मक भूमिका अदा कर रहे हैं। दोनों देश हर क्षेत्र में अपने रणनीतियों के माध्यम से विकास की ओर अग्रसर हो रहे हैं, जो कि दोनों देशों को वैश्विक स्तर पर मजबूत स्थिति प्रदान करने में सहायता प्रदान करता हैं ।दोनों देशों ने विभिन्न मामलों पर संवाद बनाए रखा तथा संयुक्त आर्थिक सहयोग के कार्यक्रम की भी शुरुआत की बांग्लादेश के प्रधानमंत्री शेख हसीना के मौजूदा से भारत बांग्लादेश दोनों के मध्य सकारात्मक नतीजे सामने आए हैं। मुक्त व्यापार समझौता वार्ता की शुरुआत कुल मिलाकर दक्षिण एशिया में बांग्लादेश भारत का एक भरोसेमंद साझेदार है । दोनों देशों को आपसी विश्वास और संप्रभुता के सम्मान के साथ आगे बढ़ना चाहिए। आर्थिक और तकनीकी साझेदारी को और गहरा करने से दोनों राष्ट्रों का विकास तेज होगा।

संदर्भ सूची

1 नेशनल इंटेलिजेंस काउंसिल (2021):**''वैश्विक रूझान 2040 एक अधिक संघर्षपूर्ण दुनिया''।**

2 सीकरी.राजीव(2017): ''**भारत की विदेश नीति चुनौती और रणनीतिया''**, नई दिल्ली ,सेज पब्लिकेशन।

3 कासिम .,मोहम्मद अबुल, इस्लाम .शरीफुल,(2016):''**नरेंद्र मोदी की बांग्लादेश नीति और भारत बांग्लादेश संबंध चुनौतियां और संभावित नीति प्रतिक्रियाएं**''नई दिल्ली,'इंडियन फॉरेन अफेयर जनरल ।

4 चंद्र.विशाल(2015):**''भारत और दक्षिण एशिया क्षेत्रीय धारणाओं की खोज'',**नई दिल्ली, पेंटागन प्रेस द्वारा प्रकाशित।

5 मिलिंद.ठक्कर(2010):**''भारत बांग्लादेश संबंध कमजोर संबंधों की पहेली'',** नई दिल्ली ,ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी।

6 खन्ना. वी एन ,अरोड़ा लिपाक्षी(2008):**''भारत की विदेश नीति''** ,नई दिल्ली, विकास पब्लिशिंग हाउस ।

7 दीक्षित. जै एन,(2001):**''भारत की विदेश नीति और उसके पड़ोसी''**नई दिल्ली, ज्ञान पब्लिशिंग हाउस द्वारा प्रकाशित ।

8 जैन. बी एम,(2010):**''नए दक्षिण एशिया में भारत'' परमाणु युग में कूटनीति**, लंदन, टोरस एकेडमी

9 बिस्वाल. तपन(2010):**''अंतरराष्ट्रीय संबंध''** नई दिल्ली, मेक मिलन पब्लिशर द्वारा प्रकाशित

10 दीक्षित. जै एन(2001):**''भारत के विदेश नीति और उसके पड़ोसी ''**नई दिल्ली, ज्ञान पब्लिशिंग हाउस द्वारा प्रकाशित ।

11 मिनिस्ट्री ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स(2021):''**भारत बांग्लादेश के संबंध'',''भारत सरकार** रिपोर्ट।

12 परवेज. समीम,(2019):''**भारत बांग्लादेश'',काउंटर टेररिज्म,**ईयर बुक ।

13 मिनिस्ट्री ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स(2011):''**भारत बांग्लादेश के संबंध'',भारत सरकार** रिपोर्ट।

14.रंजन.,चक्रवर्ती,(2020):**''भारत बांग्लादेश के 50वीं वर्षगांठ'',**नई दिल्ली,'इंडिया'एस फॉरेन अफेयर जनरल ,प्रिंट पब्लिकेशन द्वारा प्रकाशित।

15.चंद्र., विशाल,(2015):**''भारत और दक्षिण एशिया क्षेत्रीय धारणाओं की खोज'',**नई दिल्ली, पेंटागन प्रेस द्वारा प्रकाशित।

16.अनिंघ. ज्योति मजूमदार,(2014):**''भारत बांग्लादेश की समझ बनाना ''**इंडिया क्वार्टरल ,नई दिल्ली,'' सेज पब्लिकेशन द्वारा प्रकाशित।

17.खान.अमेजॉन,.मोहम्मद हॅमायू कबीर,(2002):**''बांग्लादेश में सिविल सोसाइटी एंड डेमोक्रेसी''** ढाका ,एकेडमिक प्रेस।

18.हुसैन.स्श्फ(1981):**''भारत बांग्लादेश संबंधः''** इश्यूज एंड प्रॉब्लम्स''यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस ,एशियाई सर्वे ।

19.रहमान. शेख मुजीबुर,(1972):**''बांग्लादेश मेरा बांग्लादेश''चयनित भाषण '',** नई दिल्ली, ओरियंट लोंगमैन।

20.भारद्वाज. कुमार संजय,(2020):**"भारत बांग्लादेश संबंधों के सिद्धांत",**नई दिल्ली ,इंडिया फॉरेन अफेयर जनरल प्रिंट पब्लिकेशन ।

21.पटनायक. एस स्मृति(2020):"**भारत बांग्लादेश संबंधःस्थाई चुनौतियां**" नई दिल्ली, इंडियन फॉरेन अफेयर जनरल प्रिंट पब्लिकेश।